Toppersnotes
Unleash the topper in you

UP – PGT

स्नातकोत्तर शिक्षक

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

अर्थशास्त्र

भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

UP PGT

अर्थशास्त्र

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	अर्थशास्त्र की प्रकृति	1-13
2.	उच्च आर्थिक सिद्धान्त • साम्य का विचार एवं प्रकार मांग का सिद्धान्त • मांग के लोच की माप, आंडी या प्रतिलोच • उपभोक्ता का अतिरेक, तटस्थ, वक्र तकनीक, उपभोक्ता साम्य • उद्घाटित अधिमान सिद्धान्त, उत्पत्ति के नियम एवं पैमाने के प्रतिफल नियम, उत्पादन फलन – अल्पकालीन एवं दीर्घ कालीन • काब–डगलस उत्पादन फलन जनसंख्या संक्रमण, जनसंख्या संक्रमण सिद्धान्त	14-74
3.	अर्थ का सिद्धान्त • पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, द्वाधिकार, अल्पाधिकार एवं एकाधिकृत प्रतियोगिता तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था में कीमत निर्धारण • वितरण– वितरण का केन्द्रीय एवं आधुनिक सिद्धान्त • लगान के सिद्धान्त, आभास लगान एवं अवसर लागत • मजदूरी का आधुनिक सिद्धान्त • ब्याज के सिद्धान्त, प्रतिष्ठित सिद्धान्त • कीन्स की द्रवता पसंदगी सिद्धान्त एवं तरलता–जाल • उधार देय योग्य कोष सिद्धान्त नाइट एवं शाकिल का लाभ सिद्धान्त, उत्पादन समाप्ति प्रमेय • कीन्स का रोजगार सिद्धान्त गुणक एवं त्वरक सिद्धान्त, उपभोग एवं विनियोग फलन, व्यापार चक्र के सिद्धान्त–हाटे हेयक तथा हिक्स	75-150

अर्थशास्त्र की प्रकृति

अर्थशास्त्र की प्रकृति से अभिप्राय ज्ञान का वह क्रमबद्ध और सम्पूर्ण अध्ययन है जो कारण और प्रभाव के संबधं की व्याख्या करता है। अर्थशास्त्र की प्रकृति से अभिप्राय है कि अर्थशास्त्र विज्ञान है अथवा कला है। कुछ अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि अर्थशास्त्र विज्ञान है । विज्ञान किसी भी विषय का क्रमबद्ध और संपूर्ण अध्ययन है ।
विज्ञान में नियम होते है। इसी तरह अर्थशास्त्र में भी नियम है। जैसे की मांग का नियम और पूर्ति का नियम आदि। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए कुछ विशेषताओं का होना आवश्यक है ।
1. तथ्यों को इकटठा करना,
2. ठीक-ठीक मात्रात्मक माप,
3. तथ्यों की क्रमबद्ध व्याख्या और
4. तथ्यों की जांच ।

ये सभी विशेषताएं अर्थशास्त्र में पाई जाती है । इसलिए अर्थशास्त्र को विज्ञान माना जा सकता है। कुछ अर्थशास्त्री यह मानते है कि अथशास्त्र विज्ञान नहीं है । उनके अनुसार अर्थशास्त्र के नियम निश्चित नहीं होते है । जैसे की मांग के नियम के अनुसार अन्य बातों के समान रहने पर कीमत के घटने पर मांग मात्रा बढती है। और कीमत के बढने पर मांग मात्रा घटती है । वर्तमान नियम में हमने अन्य बातों को समान मान लिया है जैसे की उपभोक्ता की आय । जबकि अन्य बातें जरूरी नहीं है कि समान रहे । अन्य बातों के समान नहीं रहने पर मांग का नियम अस्तित्व में नहीं रहेगा । इस प्राकर आर्थिक नियम मान्यताओं पर आधारित होता है । मान्यताओं के नहीं रहने पर आर्थिक नियम भी अस्तित्व में नहीं रहता है। दूसरा पक्ष यह है कि विज्ञान ने नियम की सार्वभौमिकता होती है अथवा ये सभी जगह पर समान रूप से लागु होते है । जबकि अर्थशास्त्र के नियम सभी परिस्थितियों और सभी समय में समान नहीं रहते है । अर्थशास्त्र के नियम समय और परिस्थितियों के बदलने पर बदल जाते है । तीसरा कारण है कि आर्थिक घटनाओं की ठीक-ठीक माप संभव नहीं है। चौथा कारण है की अर्थशास्त्र में प्रयोगशाला का प्रयोग नहीं होता है। पांचवा कारण यह है कि विज्ञान में भविष्यवाणियां की जा सकती है, जो कि निश्चित होती है, जबकि अर्थशास्त्र की भविष्यवाणियाँ निश्चित नहीं होती है । ये भविष्यवाणियाँ बदल सकती है ।

हमने पहले दृष्टिकोण में अर्थशास्त्र को विज्ञान मानकर इसकी व्याख्या की है । दूसरा दृष्टिकोण अर्थशास्त्र को कला के रूप में देखता है, जिसमे की सिद्धांतों और नियमों का प्रयोग समस्याओं के हल में किया जाता है । नियमों और सिद्धांतों का निर्माण करना विज्ञान कहलाता है और इन नियमों का प्रयोग करना कला कहलाता है ।

अर्थशास्त्र को कला बताने के बारे में कई पक्ष है। पहला पक्ष है कि अर्थशास्त्र हमें केवल नियमों की जानकारी नहीं देता बल्कि उन नियमों की मदद से समस्या का समाधान भी देता है । दूसरा पक्ष है कि अर्थशास्त्री मार्शल मानते है कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य समाज के कल्याण को अधिकतम करना है। यह दर्शाता है कि अर्थशास्त्र एक कला है तीसरा पक्ष है की अर्थशास्त्र के नियमों का व्यावाहरिक प्रयोग भी होता है। चौथा पक्ष है कि अर्थशास्त्र के विभिन्न नियमों और सिद्धांतों का प्रयोग करके विभिन्न नीतियाँ और योजनाएं बनाई जाती है ।

अर्थशास्त्र का क्षेत्र

अर्थशास्त्र का संबंध असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सीमित संसाधनों का किफायती प्रयोग है । संसाधनों का इस प्रकार से उपयोग करना की ज्यादा से ज्यादा आवश्यकताओं की संतुष्टि हो सके । परन्तु अलग-अलग अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग समय पर अलग-अलग परिभाषाएं दी है । परिभाषाओं के बदलने के साथ अर्थशास्त्र के क्षेत्र में परिवर्तन होता गया है । एडम स्मिथ, जोकि अर्थशास्त्र के जन्मदाता कहे जाते है । उन्होने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा है । अर्थशास्त्र का सबसे पहले क्रमबद्ध अध्ययन एडम स्मिथ ने किया था । प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों में से ही एक डेविड रिकोर्डो ने अर्थशास्त्र को धन के अध्ययन के साथ धन के वितरण का भी अध्ययन बताया है परन्तु सभी अर्थशास्त्री धन संबंधित परिभाषा से संबंध नहीं रखते है । ये अर्थशास्त्री धन संबंधित परिभाषा से सहमत नहीं है । एडम स्मिथ द्वारा दी गई धन पर आधारित अर्थशास्त्र की परिभाषा की कालाईल और रस्किन जैसे लेखकों ने आलोचना की । इस परिभाषा के कारण उन्होंने अर्थशास्त्र को दाल-रोटी का विज्ञान अथवा कुबेर-पूजा का नाम दिया। उनके अनुसार अर्थशास्त्र लोगों को स्वार्थी बना देगा । उससे सामाजिक और नैतिक पतन हो जाएगा । उनके अनुसार अर्थशास्त्र का संबंध केवल धन की उत्पति और उसके संचय पर केन्द्रित हो जाएगा। दूसरा इस परिभाषा में केवल वस्तुओं को लिया गया है और सेवाओं को बाहर रखा गया है ।

इस परिभाषा का सबसे बडा दोष है की इस परिभाषा ने धन को प्राथमिक महत्व दिया है और मनुष्य को गौण स्थान दिया है । यह परिभाषा बताती है कि धन मनुष्य के लिए नहीं बलिक मनुष्य धन के लिए है। इस परिभाषा ने धन के संचय पर अधिक बल दिया है और कल्याण की अपेक्षा की है ।

धन संबंधी परिभाषा में अनेक कमियों को देखते हुए ऐल्फ्रेड मार्शल ने एक नई परिभाषा दी है । मार्शल ने बताया की धन एक साध्य नहीं है बल्कि साधन है । धन जरूरत पूरा करने का एक साधन है । धन की सहायता से कल्याण को बढाया जाता है । इसलिए मार्शल की परिभाषा को कल्याणकारी परिभाषा कहते है। मार्शल ने धन को कल्याण बढाने का एक जरिया माना है । अर्थशास्त्र का संबंध धन को खर्च करके कल्याण को बढाने से है। मार्शल ने अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है । राजनैतिक अर्थव्यवस्था अथवा अर्थशास्त्र मानवता का जीवन की साधारण क्रियाओं में अध्ययन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की परीक्षा करता है, जिसका कल्याण की भौतिक आवश्यकताओं की प्राप्ति और उनके प्रयोग के साथ अत्यंत निकट संबध है । मार्शल की परिभाषा के अनुसार अर्थशास्त्र मनुष्य के उन कार्यों का अध्ययन करता है, जो वह जीवन की साधारण दिनचर्या में करता है। इस प्रकार मार्शल का अर्थशास्त्र मनुष्य की आय प्राप्ति और उसके खर्च करने से संबंधित है। मार्शल मानता है की अर्थशास्त्र में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किस प्रकार से मनुष्य धन का अर्जन करते है और अपनी संतुष्टि का अधिकतम करने के लिए किस प्रकार से खर्च करता है। मार्शल ने मनुष्यों के भौतिक कल्याण पर अधिक बल दिया है। मार्शल के अतिरिक्त अन्य अर्थशास्त्रियों पीगू, कैनन, बैवरिज आदि अर्थशास्त्रियों ने भी कल्याण संबंधित परिभाषा का समर्थन किया है। वे भी मानते है की अर्थशास्त्र का संबंध मनुष्यों के कल्याण को बढाने से है ।

परन्तु मार्शल की कल्याणकारी परिभाषा की भी आलोचना हुई है । मार्शल की कल्याणकारी परिभाषा के सबसे बडे कटु आलोचक रॉबिन्स है । रॉबिन्स ने 1935 में अपनी पुस्तक In Essay on the nature And significance of economic science में अर्थशास्त्र की नई परिभाषा दी। रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र

की नई परिभाषा देते हुए मार्शल की परिभाषा में अनेक कमियों का वर्णन किया । मार्शल अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान मानते है । जबकि रॉबिन्स अर्थशास्त्र को मानवीय विज्ञान मानता है । मार्शल ने वस्तुओं को भौतिक व अभौतिक के रूप में वर्गीकरण किया था जोकि अवैज्ञानिक व गलत विभाजन था। इस विभाजन की कोई आवश्यकता नहीं थी। मार्शल ने जिस कल्याण शब्द का प्रयोग किया है उसका मापन बडा ही कठिन है ।

इस प्रकार रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र की एक नई परिभाषा दी है । रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है कि ''अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो अनेक उद्देश्यों और वैकल्पिक उपयोगों वाले दुलर्भ साधनों के संबंध में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।'' रॉबिन्स के परिभाषा का सम्बध दर्लभ साधनों के किफायती उपयोग से है। अगर किफायतपूर्ण उपयोग नहीं करेंगे तो हमारी असीमित आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं हो पाएगी। साधन केवल सीमित ही नहीं होते है बल्कि उनके वैकल्पिक उपयोग भी होते है। जैसे की दूध केवल एक सीमित साधन ही नहीं है। बल्कि दूध के वैकल्पिक प्रयोग भी है। दूध केवल पीने के काम नहीं आता बल्कि दूध पनीर बनाने, दही बनाने मावा बनाने के आदि में प्रयुक्त होता है। वर्तमान परिस्थितियों में रॉबिन्स की परिभाषा उपयुक्त नजर आती है। रॉबिन्स की परिभाषा का संबंध आर्थिक समस्या से है। आर्थिक समस्या से ही चयन की समस्या उत्पन्न होती है। आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के निम्न कारण है ।

1. <u>असीमित आवश्यकताएं</u> :- मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित होती है। एक आवश्यकता के पूरा हो जाने पर हमारी दूसरी और तीसरी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। आवश्यकताएं कभी भी पूरी नहीं होती है। आवश्यकताएं हमेशा बढती रहती है। परन्तु आवश्यकताओं को पूरा कभी भी नहीं किया जा सकता है ।

2. <u>सीमित संसाधनों</u> :- दूसरा तथ्य है कि हमारे पास आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो साधन है। वे दुर्लभ और सीमित है। आर्थिक समस्या उत्पन्न होने का सबसे बडा कारण ही असीमित आवश्यकताएं है। अर्थशास्त्र के अध्ययन की जरूरत सीमित संसाधनों के कारण ही पडती है। अगर संसाधन असीमित होते तो अर्थशास्त्र का अध्ययन ही नहीं होता। क्योंकि ऐसी स्थिति में वस्तुएं मूल्यहीन हो जाती अथवा वस्तुएं हमें मुफ्त में मिलने लग जाती है ।

3. <u>साधनों के वैकल्पिक उपयोग</u> :- साधन केवल सीमित ही नहीं होते है बल्कि साधनों के वैकल्पित उपयोग भी होते है। एक ही साधन को कई स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है। हमारे पास साधन सीमित है। इसलिए हमें यह देखना है कि इन सीमित साधनों का प्रयोग किस जगह करे जिससे की हमारे उद्देश्य की पूर्ति हो सके और एक उपभोक्ता की अधिकतम संतुष्टि हो सकेऔर उत्पादक को अधिकतम लाभ हो सके। अगर केवल एक ही प्रयोग हो तो चयन की कोई समस्या ही नहीं होती। क्योंकि चुनाव तभी किया जाता है तब साधनों के वैकल्पिक प्रयोग होते है। इस प्रकार यह चुनाव करना है कि साधन को कौन सी जगह प्रयोग करे ।

इस प्रकार रॉबिन्स ने धन की परिभाषा और कल्याण की परिभाषा से हटकर एक व्यवहारिक परिभाषा दी है। परन्तु रॉबिन्स की परिभाषा की भी आलोचना हुई है। रॉबिन्स ने सबसे पहले यही बताया था कि अर्थशास्त्र का संबंध अर्थशास्त्र का अर्थ एवम् महत्वपूर्ण संकल्पनाएं कल्याण से नहीं है। जबकि रॉबिन्स की परिभाषा में भी यह निष्कर्ष निकल रहा है कि सभी ईकाइया संसाधनों का उचित प्रयोग करती है। जिससे संतुष्टि को अधिकतम किया जा सके। हम जानते है कि संतुष्टि कल्याण से धनात्मक रूप से जुडी

हुई है। संतुष्टि बढने पर कल्याण बढता है। इसलिए हम यह मान सकते है कि रॉबिन्स की परिभाषा भी एक कल्याणकारी परिभाषा है।

दूसरा रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को केवल मूल्य सिद्धांत तक ही सीमित कर दिया है। यह केवल इस बात का अध्ययन करता है की साधनों का वितरण किस प्रकार होगा। जबकि अर्थशास्त्र का क्षेत्र इससे कही अधिक है। अर्थशास्त्र से हम समष्टि रूप से आय व रोजगार के सिद्धांत का भी अध्ययन करते है। परन्तु कुल राष्ट्रीय आय व रोजगार के स्तर का निर्धारण रॉबिन्स की परिभाषा में नहीं आता है। रॉबिन्स की परिभाषा में अर्थशास्त्र का क्षेत्र काफी सीमित हो गया है। तीसरा रॉबिन्स की परिभाषा की इसलिए आलोचना होती है क्योंकि रॉबिन्स की परिभाषा में कही भी विकास के सिद्धांतों का अध्ययन नहीं होता है जबकि वर्तमान में आर्थिक विकास के सिद्धांतों का सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। रॉबिन्स की परिभाषा में साधनों का वितरण और आंवटन है। जबकि अल्पविकसित देशों में सबसे ज्यादा भूमिका विकास के अर्थशास्त्र की है। विकास के अर्थशास्त्र से ही गरीबी बेरोजगारी, असमानता जैसी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। आर्थिक विकास द्वारा जीवन स्तर को .पर उठाया जाता है। तीसरा रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए अस्थिरता जैसी महत्वपूर्ण समस्या को छोड दिया है। जबकि विकसित और अविकसित देशों के सामने सबसे बडी चुनौती अस्थिरता की है। अस्थिरता को हम मंदी और तेजी के रूप में परिभाषित करते है। अस्थिरता होने पर बेरोजगारी बढ जाती है। रॉबिन्स की परिभाषा में अस्थिरता का कही भी प्रयोग नहीं हो रहा है।

प्रो. चार्ल्स शुल्ज कही लिखते है कि ''रॉबिन्स की परिभाषा भ्रामक है क्योंकि यह आधुनिक अर्थशास्त्र के दो प्रमुख विषयों आर्थिक विकास और अस्थिरता को प्रकट नहीं करती।''

रॉबिन्स की इस बात पर भी आलोचना की जाती है की उसने अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान के स्थान पर मानवीय विज्ञान बना दिया है।

अर्थशास्त्र की चौथी परिभाषा विकास के रूप में दी जाती है। रॉबिन्स की परिभाषा में विकास की समस्या का अध्ययन नहीं किया गया है। जबकि विकास का अल्पविकसित देशों में महत्वपूर्ण योगदान है। सैमुल्सन के अनुसार ''अर्थशास्त्र यह अध्ययन करता है कि कैसे व्यक्ति और समाज मुद्रा के सहित अथवा मुद्रा के बिना दुर्लभ उत्पादक संसाधनों जिनके वैकल्पिक प्रयोग हैं, उन्हें काम पर लगाने के बारे में, विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन के बारे में और उन्हें विभिन्न लोगों और समाज के वर्गों में वर्तमान और भविष्य में वितरित करने के बारे में चयन करते है।''

बैन्हम के अनुसार ''अर्थशास्त्र देश की राष्ट्रीय आय के आकर, वितरण और स्थिरता को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन करता है।'' उपरोक्त सभी परिभाषाओं से पता चलता है कि अर्थशास्त्र में हम केवल वर्तमान में अपने सीमित संसाधनों का कुशलतम प्रयोग चाहते है। बल्कि दीर्घकाल में भी संसाधनों को उचित उपयोग करना सीखते है। अर्थशास्त्र का संबंध इष्टतम करने की समस्या के साथ है। उपरोक्त सभी परिभाषाएं अर्थशास्त्र के क्षेत्र को बढा रही है।

अर्थशास्त्र की विकास संबंधित परिभाषा अन्य सभी परिभाषाओं से ठीक है। क्योंकि इस परिभाषा में हम अपने सीमित संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करना तो सीखते ही है बल्कि दीर्घकाल में भी संसाधनों का प्रयोग करना भी सीखते है। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए अर्थशास्त्र की विकास संबंधी परिभाषा

ज्यादा उपयुक्त है। क्योंकि विकासशील देशों को अपने सीमित संसाधनों का प्रयोग इस तरह से करना है की गरीबी का निवारण हो, बेरोजगारी कम हो और असमानता भी कम हो।

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री को दो भागों में बांटा जाता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र। अर्थशास्त्र को व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में रेगनार फ्रिश ने बांटा था। व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यष्टि स्तर पर दुर्लभ संसाधनों का आवंटन किया जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र की प्रकृति एवम् क्षेत्र

अ. व्यष्टि अर्थशास्त्र की प्रकृति :- किसी भी विषय की प्रकृति से अभिप्राय है की वह विषय विज्ञान है या कला। किसी भी विषय का क्रमबद्ध अध्ययन विज्ञान कहलाता है। विज्ञान में नियम होते है। व्यष्टि अर्थशास्त्र को हम विज्ञान के रूप में भी परिभाषित कर सकते है। क्योंकि व्यष्टि अर्थशास्त्र में कई सारे नियम है जैसे मांग का नियम, पूर्ति का निमय, परिवर्तनशील अनुपात का नियम आदि इसलिए व्यष्टि अर्थशास्त्र विज्ञान है।
परन्तु व्यष्टि अर्थशास्त्र कला भी है। कला से अभिप्राय विज्ञान के नियमों का व्यावहारिक प्रयोग है। मांग के नियम, पूर्ति के नियम परिवर्तनशील अनुपात के नियमों का अर्थशास्त्र में प्रयोग भी होता है। जैसी की मांग वक्र की ढलान निकालकर हम मांग की कीमत लोच की गणना कर सकते है। परिवर्तनशील अनुपात के नियमों का भी हम विभिन्न समस्याओं के समाधान में प्रयोग करते है।

ब. व्यष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र :- किसी भी विषय के क्षेत्र से अभिप्राय: है कि उस विषय में हम किन-किन बातों का अध्ययन किया जाता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र के क्षेत्र से अभिप्राय है की व्यष्टि अर्थशास्त्र में हम किस- किस समस्या का अध्ययन करते है। प्रोफेसर लर्नर ने कहा है कि "व्यष्टि अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र को माइक्रोस्कोप द्वारा देखा जाता है। जिससे पता चल सके कि आर्थिक जीवी के लाखों कोश-व्यक्ति तथा परिवार उपभोक्ताओं के रूप में तथा व्यक्ति तथा फर्मे उत्पादकों के रूप में संपूर्ण आर्थिक जीवी के कार्यचालन में अपना योगदान किस प्रकार दे रहे है।"

व्यष्टि अर्थशास्त्र में निम्नलिखित क्षेत्रों को अध्ययन किया जाता है ।

1. उपभोक्ता व्यवहार :- व्यष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक निर्णय लेने वाली ईकाइयों का अध्ययन किया जाता है। इस क्रम में सबसे सुक्ष्म ईकाई उपभोक्ता है। एक उत्पादक किस वस्तु का उत्पादन करेगा ये इस बात पर निर्भर करता है कि उपभोक्ता किस वस्तु को पसंद करता है। उस वस्तु का उत्पादन होगा जिस वस्तु की मांग ज्यादा होगी।
2. उत्पादक व्यवहार :- दूसरे क्रम में सबसे महत्वपूर्ण ईकाई उत्पादक है। उत्पादक वो ईकाई है जो किसी वस्तु में मूल्य का निर्माण करता है। उत्पादक व्यवहार में यह अध्ययन किया जा सकता है कि साधनों में परिवर्तन होने पर उत्पादन पर क्या प्रभाव पडेगा। साधनों में परिवर्तन का अल्पकाल में क्या प्रभाव पडेगा और दीर्घकाल में क्या प्रभाव पडेगा। उत्पादक व्यवहार में लागतों का भी अध्ययन करते है।
3. वस्तु बाजार अध्ययन :- बाजार एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें उत्पादक और उपभोक्ता कीमत व मात्रा का समझौता करते है। अलग-अलग विशेषता के आधार पर अलग-अलग बाजार का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे की पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता और अल्पाधिकार। किस

वस्तु की कितनी कीमत होगी जैसे की मांग, लागत, बाजार के प्रकार व बाजार भी कीमत निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

4. साधन बाजार अध्ययन :- साधनों के बाजार में उत्पादन के साधनों का क्रय विक्रय होता है। वस्तु बाजार की तरह साधन बाजार के भी अलग-अलग प्रकार है। अलग-अलग बाजारों में साधन कीमत निर्धारण अलग-अलग तरह से होता है। सीमांत उत्पादकता सिद्धांत साधन कीमत निर्धारण का महत्वपूर्ण सिद्धांत है।
5. कल्याणकारी अर्थशास्त्र :- व्यष्टि अर्थशास्त्र का नीतिगत अध्ययन कल्याणकारी अर्थशास्त्र है।

वास्तविक व आदर्शात्मक अर्थशास्त्र

अ. वास्तविक अर्थशास्त्र :- अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए यह जानना बडा आवश्यक है की अर्थशास्त्र वास्तविक है या आदर्शात्मक । केन्ज, रॉबिन्स, बोल्डिंग और मिल्टन फ्रीडमैन जैसे अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र एक वास्तविक अध्ययन है। वास्तविक विज्ञान में किसी घटना की व्याख्या ऐसे की जाती है जैसे वो घटित होती है। गरीबी, बेरोजगारी और असमानता का अध्ययन वास्तविक अर्थशास्त्र में किया जाता है। वास्तविक अर्थशास्त्र में क्या है, क्या था, क्या होगा जैसे तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

ब. आदर्शात्मक अर्थशास्त्र :- आदर्श विज्ञान वह है जो कुछ मूल्य, आदर्श या पैमाने निश्चित करने का प्रयत्न करता है। आदर्शात्मक दृष्टिकोण का सार है कि क्या होना या नहीं होना चाहिए। आदर्शात्मक अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्री आर्थिक समस्या का हल बताते है। जबकि वास्तविक अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र आर्थिक समस्या की व्याख्या करते है। वास्तविक विज्ञान समस्या के बारे में जबकि आदर्शात्मक विज्ञान समस्या के हल के बारे में है।

आर्थिक विश्लेषण में मान्यताओं की भूमिका

अर्थशास्त्र के स्वरूप को समझने के लिए मान्यताओं को स्पष्ट ढंग से समझना महत्वपूर्ण है। जिन पर अर्थशास्त्र को सैद्धांतिक ढांचा बनाया गया है। अर्थशास्त्र की मुख्य मान्यताएँ निम्नलिखित है।

1. अन्य बातें समान रहे :- अर्थशास्त्र का हर सिद्धांत और नियम अन्य बातें समान रहे की मल मान्यता पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए मांग का नियम बताता है कि अन्य बातों के समान रहने पर कीमत के कम होने पर मांग बढती हैऔर कीमत के बढने पर मांग कम होती है।
2. विवेकशीलता :- अर्थशास्त्र का संबंध विवेकशील उपभोक्ताओं, उत्पादकों, मजदूरों, बचतकर्ताओं और निवेशकों के व्यवहार के साथ है। जैसे की एक उपभोक्ता कम खर्च करके अधिक संतुष्टि चाहता है। एक बचतकर्ता दी गई मात्रा से अधिक ब्याज प्राप्त करने की सोचता है। एक विवेकशील सरकार का लक्ष्य सामाजिक लाभ को अधिकतम करने का होता है।
3. आर्थिक मनुष्य :- सभी नियम और सिद्धांत आर्थिक मनुष्य की मान्यता पर टिके है। एक आर्थिक मनुष्य वह औसत सामान्य व्यक्ति है, जो समाज का सदस्य है।
4. संतुलन - आर्थिक विश्लेषण में एक अन्य मान्यता है कि की आर्थिक नियम और सिद्धांत संतुलन से आरंभ होता है। कोई भी स्थिति संतुलन से आंरभ होती है।

किसी वैज्ञानिक अध्ययन का सैद्धांतिक ढांचा मान्यताओं के एक दिये गए समूह पर बना होता है ।

अर्थशास्त्र में भी कुछ मान्यताएं होती है। जिन पर अर्थशास्त्र के नियम टिके होते है। अर्थ शास्त्र में मान्यताओं की भूमिका निम्नलिखित है।

1. सिद्धांतों का सरलीकरण और विशिष्टता एक विशेष वैज्ञानिक सिद्धांत से संबंधित मान्यताओं का समूह अत्यंत महत्वपूर्ण रूप से जटिलताओं को सरल बना सकता है।
2. व्याख्यात्मक सिद्धांतों का निर्माण – एक विशेष सिद्धांत सम्भवतः एक विशिष्ट घटना की व्याख्या करने के लिए बनाया गया हो। ऐसे तर्कपूर्ण और पर्याप्त सिद्धांतों का ढांचा आवश्यक रूप से मान्यताओं के एक विशेष समूह के आधार पर बनाया जाता है। मान्यताएं बदलने से सिद्धांत के निष्कर्ष भी बदल सकते है।
3. सिद्धांतों में उचित चयन– सिद्धांत भविष्य के व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करते है यदि अलग–अलग सिद्धांत एक समान भविष्यवाणी करते है तो एक सिद्धांत को दूसरे पर कैसे अभिमान दिया जा सकता है। यह चयन करने के लिए उन सिद्धांतों में से प्रत्येक में ली गई मान्यताओं को महत्व प्राप्त होता है। प्रो0 जे. आर. हिक्स ने सुझाव दिया कि जिस सिद्धांत में मान्यतायें अधिक सरल या संख्या में कम हो, उन्हें अन्य सिद्धांतों की तुलना में अधिमान दिया जाना चाहिए।

आर्थिक क्रियाओं का चक्रीय प्रवाह

अर्थव्यवस्था विभिन्न आर्थिक एजेंट उत्पादक, उपभोक्ता, सरकार, पूंजी तथा शेष विश्व की मदद से कार्य करती है। ये आर्थिक एजेंट विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते है। इन आर्थिक गतिविधियों से आर्थिक एजेंट के बीच प्रवाह होता है। आर्थिक एजेंटों के बीच आर्थिक प्रवाह को आय का चक्रीय प्रवाह कहते है। एक आर्थिक ईकाई से दूसरी आर्थिक ईकाई के बीच हुआ लेन–देन आर्थिक या आय का चक्रीय प्रवाह होता है। यह प्रवाह हमेशा दो–तरफा होता है। यह एक तरफा नहीं होता है। मान लीजिए कि व्यक्ति "A" व्यक्ति "B" को गेहूँ देता है और बदले में व्यक्ति ष्ठष व्यक्ति षष को चावल देता है तो इस लेन–देन का चक्रीय प्रवाह कहा जाएगा।

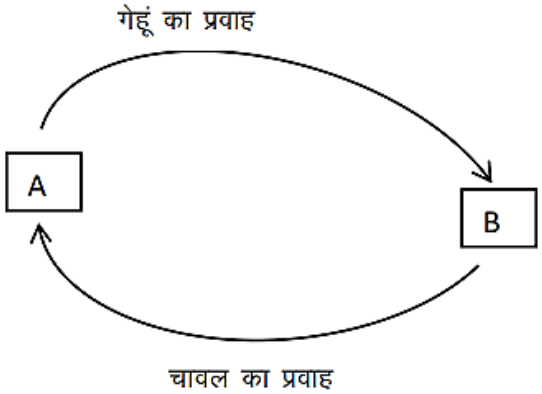

तीर की दिशा दिखाती है कि कौन प्राप्त कर रहा है यदि वस्तुओं के स्थान पर मुद्रा का विनियम होता है तो इससे वास्तविक प्रवाह के साथ–साथ मुद्रा का प्रवाह भी होता है। मान लीजिए की उपरोक्त उदाहरण में व्यक्ति ख व्यक्ति क से गेहूँ प्राप्त करता है और बदले में ख व्यक्ति क को मुद्रा देता है तो बाद वाला प्रवाह मुद्रा प्रवाह है। उसी प्रकार से यदि व्यक्ति क व्यक्ति ख को चावल की खरीद के बदले मुद्रा प्रदान करता है तो भी यह बाद वाला प्रवाह मुद्रा प्रवाह है। इन मुद्रा प्रवाहों को निम्न प्रकार से दिखाया जा सकता है।

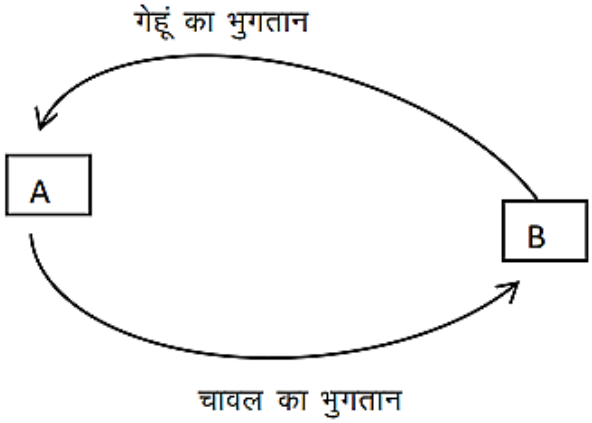

उक्त दोनों चित्र की व्याख्या से स्पष्ट है कि वास्तविक प्रवाह सीधी दिशा मे यानी बाई से दाई ओर चलता है। दूसरी तरफ मौद्रिक प्रवाह उल्टी दिशा यानी दाई से बाई ओर चलता है।

मुद्रा प्रवाह और वास्तविक प्रवाह में अन्तर

मौद्रिक एवम् वास्तविक प्रवाहों के अंतर को स्पष्ट रूप से समझना होगा। वास्तविक प्रवाह से अभिप्रायः वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह से है। वास्तविक प्रवाहों का मापन कठिन होता है क्योंकि इन्हें अलग-अलग वस्तुओं और सेवाओं को अलग-अलग इकाइयों में व्यक्त करते है। ऐसी इकाइयों को जोडा या घटाया नहीं जा सकता है। यही कारण है कि हम वास्तविक प्रवाहों को मौद्रिक प्रवाहों में व्यक्त करके उनका मापन करते है।

अर्थशास्त्र की कुछ महत्वपूर्ण संकल्पनाएं

प्रत्येक विषय की कुछ संकल्पनाएं या अवधारणाएं होती है। इन अवधारणाओं को समझ कर ही हम उस विषय को समझ सकते है। ईकाई के इस हिस्से में हम इन अवधारणाओं को समझने की कोशिश करेंगें। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाएं इस प्रकार है।

गृहस्थी

गृहस्थी एक ऐसी इकाई है जिसमें एक या कुछ लोगों का समूह मिल-जुल कर एक ही छत के नीचे रहता हैऔर सांझा उपभोग करते है। ग्रहस्थ कुल मांग की एक महत्वपूर्ण इकाई है। ग्रहस्थ क्षेत्र का समस्त खर्चे में से अधिकतर भाग उपभोग का होता है। कुल खर्चे में से कुछ प्रतिशत हिस्सा निवेश भी होता है। घर बनाने के लिए किया गया खर्च निवेश कहलाता है। जोकि परिवार क्षेत्र द्वारा किया जाता है।

फर्म

अर्थशास्त्र में फर्म का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। साधारण भाषा में फर्म एक निर्माण इकाई है जिसमें कि वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। परन्तु अर्थशास्त्र में फर्म का अर्थ इस से भी बडा है। फर्म में केवल विनिर्माण इकाईयां ही नहीं आती बल्कि सेवा और कृषि क्षेत्र भी आते है। फर्म एक ऐसी उत्पादन इकाई है जोकि उत्पादन के साधनों का प्रयोग करके दी हुई तकनीक से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करती है।

उत्पादन के साधन

उत्पादन के साधनों की सहायता से उत्पादन किया जाता है। उत्पादन के चार साधन है, भूमि, श्रम, पूंजी, और उद्यमशीलता।

आंशिक और सामान्य संतुलन

संतुलन एक ऐसी अवस्था है जिसमें एक इकाई पर कार्य करने वाली विरोधी शक्तियों में इतनी समानता है कि वह ईकाई न तो एक दिशा में और न ही दूसरी दिशा में हिल सकती है इस प्रकार सन्तुलन विश्राम की स्थिति को प्रकट करता है।

गार्डनर ऐकले के अनुसार 'एक प्रणाली को संतुलन में तब कहा जा सकता है जब इसके सभी महत्वपूर्ण दरों में परिवर्तन नहीं होता, और जब परिवर्तन के लिए दबाव या शक्तियां नहीं होती जोकि महत्वपूर्ण दरों के मूल्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन पैदा करेगी।'

सामान्य बोल-चाल की भाषा में साम्य को विश्राम की अवस्था कहा जाता है। यह एक ऐसी अनुकूलतम स्थिति है जहाँ किसी व्यवस्था पर कार्य करने वाली परस्पर विरोधी शक्तियां एक दूसरे के साथ इस प्रकार सन्तुलित हो जाती है कि वह व्यवस्था उस स्थिति से विचलित होने की कोई प्रवृति नहीं रखती। उदाहरण के तौर पर पत्थर के लिए टुकडे को धागे से बांध कर हिला देने पर वह घडी के पैन्डुलम की तरह दायें- बायें हिलने लगता है। यदि उस टुकडे को दुबारा न हिलाया जाये तो वह धीरे-धीरे एक स्थिति पर आकर रूक जायेगा। अतः वह स्थिति जिस पर पत्थर का टुकडा आकर रूक जाता है साम्य की अवस्था कही जा सकती है। परन्तु उपरोक्त व्याख्या अधूरी है क्योंकि पत्थर के टुकडे के संतुलन में होने पर उसमें गति का पूर्णतः अभाव होता है। परन्तु अर्थशास्त्र के अन्तर्गत साम्य की दशा में गति का पूर्ण अभाव नहीं होता है। अर्थशास्त्र में गति होने पर भी संतुलन हो सकता है। इसलिए संतुलन एक विश्राम की अवस्था है परन्तु उसको गतिहीन की अवस्था नहीं कहा जा सकता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि संतुलन एक विचलन रहित अवस्था होती है गतिरहित नहीं, अर्थात संतुलन में गति तो होनी चाहिए लेकिन इस गति की दर में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। प्रो. डे. के मेहता के अनुसार ''अर्थशास्त्र में संतुलन गति में परिवर्तन की अनुपस्थिति को बताता है जबकि भौतिक विज्ञान में संतुलन, स्वयम् गति की अनुपस्थिति का सूचक है।''

आंशिक संतुलन

आंशिक संतुलन आर्थिक प्रणाली के एक भाग या अंग से संबंधित संतुलन है। अर्थव्यवस्था के प्रमुख भाग का संबंध उपभोक्ता, उत्पादन साधन, एक विशेष उत्पादन करने वाली फर्म या एक विशेष उद्योग के संतुलन के साथ है। एक विशेष वस्तु की कीमत का निर्धारण भी आंगिक संतुलन को प्रकट करता है। प्रो. स्टिगलर के अनुसार ष्आर्थिक संतुलन वह होता है जो सीमित तथ्यों पर आधारित हो, इसका एक उपयुक्त उदाहरण किसी एक वस्तु की कीमत है जबकि विश्लेषण करते समय अन्य सभी वस्तुओं की कीमतें यथास्थिर मान ली जाती है।ष आंशिक साम्य के विचार का प्रतिपादन यद्यपि फ्रांसीसी अर्थशास्त्री अगस्टिन कुर्नो तथा जर्मन अर्थशास्त्री हंस वान मेगोल्ट द्वारा किया गया था परन्तु विश्लेषण को इस तकनीक को नयी साज-सज्जा प्रदान करने का श्रेय डा. मार्शल को दिया जाता है। पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत निर्धारण के मार्शल के विश्लेषण में एक दी गई वस्तु का मांग फलन इस मान्यता पर निर्भर होता है कि अन्य वस्तुओं की

कीमते समान रहती है। यदि अन्य वस्तुओं की कीमत को स्थिर मानकर ही हम मांग के नियम की व्याख्या करते है। क्योंकि अगर अन्य वस्तुओं की कीमतें स्थिर नहीं रहेंगी तो मांग का नियम अपना कार्य नहीं करेगा यानि कीमते कम होने पर मांग नहीं बढेगी और कीमत के बढने पर मांग कम नहीं होगी।

आंशिक संतुलन के अनेक महत्व है। जैसे की कुछ विशेष प्रकार की बाधाओं द्वारा उत्पन्न आर्थिक समस्याएं ऐसी भी होती है जिनका प्रभाव किसी उद्योग विशेष तक ही सीमित होता है। ऐसी समस्याओं और उनके प्रभावों का अध्ययन केवल आंशिक संतुलन द्वारा ही किया जा सकता है। उदाहरणार्थ माना कि किसी औद्योगिक केन्द्र में स्थापित विभिन्न प्रकार के उद्योगों में से केवल किसी एक विशेष-उद्योग के श्रमिकों द्वारा हडताल कर दी जाती है। ऐसी स्थिति में चूंकि हडताल का प्रभाव अधिकांश रूप से उसी उद्योग विशेष पर और उसके श्रमिकों तक ही सीमित रहेगा। अतः यहां हडताल से उत्पन्न समस्या का अध्ययन आंशिक साम्यदृविश्लेषण द्वारा ही किया जा सकता है, न कि सम्पूर्ण श्रमिक-वर्ग के सामान्य विश्लेषण द्वारा।

दूसरा जब भी कोई आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है तो उसके प्रभाव तीन स्तरों पर अनुभव किये जा सकते है। प्रथम स्तरीय प्रभाव दृ द्वितीयक प्रभाव तथा अन्य प्रभाव। इन तीनों प्रकार के प्रभावों में से प्रांरभिक का विश्लेषण केवल आंगिक संतुलन के द्वारा ही किया जा सकता है।

परन्तु आंशिक संतुलन की कुछ सीमाएं भी है। जैसे की यह विश्लेषण अन्य बातें समान रहें की मान्यता पर आधारित है जबकि वास्तविक जीवन में ऐसा नही हो पाता। उसका दूसरा दोष यह है कि उसमें अर्थशास्त्र के केवल एक भाग का ही अध्ययन करता है और समूची अर्थ-व्यवस्था का एक साथ व्याख्या नहीं करता है। जो बात एक फर्म या उद्योग के लिए ठीक होती है, आवश्यक नहीं कि वह सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था के लिए भी ठीक हो। इसलिए इस दृष्टि से आंशिक साम्य, सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था के अध्ययन के लिए अनुपयोगी सिद्ध होता है और उसके लिये हमें सामान्य संतुलन के विश्लेषण का सहारा लेना पडता है।

सामान्य संतुलन

सामान्य संतुलन का संबंध आर्थिक प्रणाली के किसी भाग या अंग के संतुलन से नहीं बल्कि पूरी आर्थिक प्रणाली के संतुलन से होता है। प्रो. स्टिगलर के अनुसार 'सामान्य संतुलन का सिद्धांत अर्थ व्यवस्था के सभी भागों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है।'

उदाहरणार्थ किसी एक वस्तु की कीमत-निर्धारण यदि आंशिक साम्य का विषय है तो देश का सामान्य कीमत-स्तर, सामान्य साम्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया जायेगा। सामान्य संतुलन या साम्य एक ऐसा व्यापक विश्लेषण है जो आंशिक साम्य को भी अपने अन्दर समेट लेता है। प्रो. रिचार्ड लेफ्टविच के अनुसार 'सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था उस समय सामान्य संतुलन की स्थिति में होगी जब अर्थ व्यवस्था की सभी ईकाईयाँ एक ही साथ अपना-अपना आंशिक संतुलन प्राप्त कर लेती है।'

जहाँ तक सामान्य संतुलन की धारणा के प्रतिपादन व विकास का प्रश्न है, सबसे पहले लोसेन स्कूल के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ लियोन वालरस द्वारा इस धारणा का विकास किया गया था। उनके बाद डेबेन्स,

हिक्स, कार्ल मैंजर, पैरेटो, सैम्युअलसन, टिनबर्जन और क्रिश्च आदि अर्थशास्त्रियों ने इस धारणा को और ज्यादा विकसित किया था। सामान्य संतुलन के कुछ महत्व इस प्रकार है।

1. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का चित्रण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को केवल सामान्य संतुलन द्वारा ही समझा जा सकता है।
2. पारस्परिक निर्भरता का अध्ययन–अर्थव्यवस्था में कार्यरत विभिन्न आर्थिक चर एक –दूसरे से स्वतंत्र नहीं होते बल्कि एक –दूसरे पर निर्भर करते है और एक –दूसरे को प्रभावित करते रहते है। सामान्य संतुलन विश्लेषण अर्थव्यवस्था के विभिन्न अंगों के बीच पाये जाने वाले अन्तसम्बन्धों और पारस्परिक निर्भरता के अध्ययन का संभव बनाता है।
3. नीति निर्धारण में महत्व–यह एक ऐसा विश्लेषण है जिसके द्वारा हम किसी आर्थिक घटना को निर्धारित करने वाले विभिन्न तत्वों का सामूहिक अध्ययन करके, उनमें से सबसे उपयोगिता वाले आर्थिक तत्वों को छांट लेते है और फिर उनके आधार पर उचित आर्थिक नीति का निर्माण कर सकते है। आदा–प्रदा विश्लेषण का आधार नोबल पुरस्कार विजेता डॉ डब्ल्यू लियोनटीफ द्वारा प्रतिपादित
4. आदा–प्रदा तकनीक का वास्तविक आधार सामान्य संतुलन विश्लेषण ही है। आदा–प्रदा विश्लेषण 20वीं शताब्दी के आर्थिक जगत का महानतम् अविष्कार है, जिसका प्रयोग अर्थव्यवस्था की पारस्परिक निर्भरताओं तथा जटिलताओं को समझने के लिए और अन्तः उद्योगों संबंधों का सामयिक विश्लेषण करने की दृष्टि से किया जाता है।

यद्यपि आजकल सामान्य संतुलन का महत्व बढ रहा है। परन्तु कुछ अर्थशास्त्री ऐसे भी है जो इस विश्लेषण की अपेक्षा आंशिक संतुलन विश्लेषण को अधिक महत्वपूर्ण मानते है। प्रो जार्ज स्टिगलर के सामान्य संतुलन विश्लेषण को मिथ्या एवम् भ्रामक विश्लेषण का नाम दिया है। उनके अनुसार कोई भी विश्लेषण सम्पूर्ण नहीं हो सकता है। सभी संबंधित तथ्यों पर एक साथ विचार नहीं किया जा सकता है।

स्थैतिक, तुलनात्मक स्थैतिक तथा गतिशील अथवा प्रावैगिक विश्लेषण

आर्थिक स्थैतिकी

स्थैतिकी, शब्द भौतिक विज्ञान से लिया गया है। उसका अर्थ है विश्राम की हालात या गतिहीनता। स्थैतिक अवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था से है जिसमें गति तो होती है परन्तु इस गति की दर में कोई परिवर्तन नहीं होता। सरल शब्दों में, स्थैतिक अवस्था में अर्थव्यवस्था के विभिन्न अंगों जैसे उत्पादन, उपभोग, जनसंख्या, मांग, एवम् पूर्ति आदि में परिवर्तन की कोई प्रकृति नहीं होती अर्थात ये आर्थिक तत्व स्थिर बने रहते है। प्रो. बोल्डिंग के अनुसार 'एक समान गति से लुढकती हुई गेंद स्थैतिक संतुलन की स्थिती में कही जायगी।' इससे भी अच्छा उदाहरण एक ऐसे जंगल का माना जायेगा जिसमें पेड उगते है और मर जाते है। परन्तु संपूर्ण जंगल की बनावट में फिर भी कोई परिवर्तन नहीं होता है। स्थैतिकी की धारणा को चित्र की सहायता में दर्शाया जा सकता है।

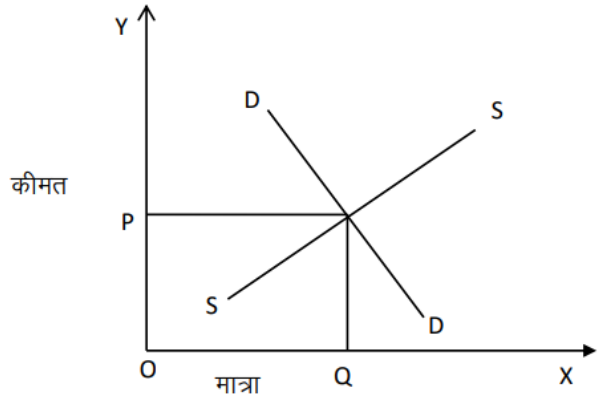

उक्त चित्र में मांग व पूर्ति वक्र को दर्शाया गया है। DD मांग वक्र है व SS पूर्ति वक्र है। संतुलन की अन्तिम अवस्था है जहाँ OQ मांग और पूर्ति की मात्रा है और OP कीमत है। E एक स्थैतिक संतुलन है जोकि यह दिखाता है कि बाजार में सभी समायोजक पहले ही हो चुके हैं। आर्थिक स्थैतिकी केवल अंतिम स्थिति पर ध्यान केंद्रित करता है, ना की प्रक्रिया पर ।

तुलनात्मक स्थैतिकी

तुलनात्मक स्थैतिकी आर्थिक स्थैतिकी का एक विस्तार मात्र है। केन्ज की पुस्तक The General Theory के प्रकाशित होने के बाद उसकी ओर काफी ध्यान दिया गया है। तुलनात्मक स्थैतिक वर्तमान संतुलन और परिवर्तन होने के बाद जो संतुलन उत्पन्न होता है उनमें तुलनात्मक अध्ययन करता है। इसलिए उसको तुलनात्मक स्थैतिक कहा जाता है। तुलनात्मक स्थैतिकी अध्ययन भी समायोजनों का अध्ययन नहीं करता है। यह केवल सन्तुलनों को अध्ययन करता है। केन्ज का संतुलन विश्लेषण तुलनात्मक स्थैतिकी कहा जा सकता है। क्योंकि यह संतुलन की अंतिम अवस्था के बारे में बात करता है। केन्ज के विश्लेषण को तब प्रावैगिकी माना जाता यदि उसने इसमें आशंसाओं में लगातार परिवर्तनों को शामिल किया होता। कुल मिलाकर केन्ज के विश्लेषण को तुलनात्मक स्थैतिक माना जा सकता है, प्रावैगिकी बिल्कुल नहीं।

आर्थिक प्रावैगिकी

प्रावैगिकी शब्द भौतिकी विज्ञान से लिया गया है जहां पर इसका अर्थ गति में ईकाई होता है। प्रावैगिक संतुलन का विचार प्रावैगिकी अर्थव्यवस्था से संबंधित है। प्रावैगिकी अर्थव्यवस्था में आर्थिक तत्व स्थिर नहीं रहते हैं। उनमें लगातार परिवर्तन होता रहता है। अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के साथ जब आर्थिक चरों में समान दर से परिवर्तन होता है तो उसे प्रावैगिकी संतुलन कहते हैं। प्रो. बोल्डिंग के अनुसार 'कालान्तर में कोई अर्थव्यवस्था उस समय प्रावैगिकी साम्य की स्थिति में होती है। जब उसके आवश्यक तत्वों में होने वाले परिवर्तनों की दरें समान बनी रहती है। हिक्स के प्रावैगिकी की व्याख्या करते हुए समय के तत्व को बहुत महत्व दिया है। स्थैतिकी और तुलनात्मक स्थैतिकी दोनों अर्थशास्त्र का अर्थ एवम् महत्वपूर्ण संकल्पनाएं में समय के तत्व की अपेक्षा की गई है। स्थैतिकी में संतुलन की अंतिम अवस्था पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, जबकि सभी समायोजन हो चुके हैं। जबकि तुलनात्मक स्थैतिकी में आर्थिक प्रणाली किसी विशेष समय अवधि में एक संतुलन की अवस्था से दूसरी अवस्था तक छलांग लगा देती है। हिक्स के अनुसार, आर्थिक प्रावैगिकी का संबंध ष्आर्थिक सिद्धांत के उन भागों के साथ है जिनमें हर मात्रा समय से संबंधित होती है।'

सीमांत

परम्परावादी आर्थिक सिद्धांत में आर्थिक निर्णय लेने के लिए सीमांत सिद्धांत का सबसे ज्यादा योगदान है। जैसे की गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण में एक वस्तु की दशा में उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि तब प्राप्त होती है जब वस्तु से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता वस्तु की कीमत के बराबर हो

MUx=Px

दो वस्तुओं की स्थिति में संतुलन की शर्त

$$\frac{MUx}{Px} = \frac{MUy}{Py}$$

इसी तरह से क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण में संतुलन की शर्त इस प्रकार होगी

$$\text{MRSxy} = \frac{Px}{Py}$$

क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण में संतुलन जब होता है तब प्रतिस्थापन्न की सीमांत दर दो वस्तुएं X और Y की कीमतों के अनुपात के बराबर हो ।

उत्पादक उत्पादन को अधिकतम करने अथवा लागतों को न्यूनतम करने वाले साधनों के संयोग के संबंध में निर्णय तक तब पहुंच सकता है, जब श्रम और पूंजी के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर श्रम की कीमत के पूंजी की कीमत के साथ अनुपात के समान हो जाती है।

$$\text{MRTSLK} = \frac{PL}{PK}$$

दो साधनों का इस प्रकार से निर्धारित संयोग जिसमें श्रम और पूंजी के सीमांत भौतिक उत्पाद सम्मिलित है, उत्पादक की दृष्टि में सबसे उचित होगा। एक फर्म को किसी वस्तु की कितनी मात्रा अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए पैदा करनी चाहिए यह भी सीमांत सिद्धांत के द्वारा निर्धारित होता है। इस प्रकार आर्थिक एजेंटों के द्वारा सीमांत पर विचार सबसे अच्छे सम्भव चयन और उन चयनों में विनियम में सहायता करता है।

ढलान (Slope)

अर्थशास्त्र में परिवर्तन की दर का बहुत ज्यादा महत्व है। ढलान किसी एक चर में परिवर्तन की दर की गणना करता है। उदाहरण के रूप में हम यह गणना कर सकते है कि किसी वस्तु की कीमत में 1 रू कमी होने पर मांग कितनी बढी। बढने की यह दर अर्थशास्त्र में ढलान है। अर्थशास्त्र में ढलान रेखीय समीकरण व गैररेखीय समीकरण में प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में निम्न समीकरण को लिया जा सकता है।

$$y=f(x)=10+0.8x$$

$$\text{Slope} = \frac{dy}{dx} = 0.8$$

$$\text{Slope} = 0.8$$

इसी तरह से हम गैर रेखीय समीकरण को भी ले सकते है।

$$y=f(x)=10+0.5x+0.8x^2$$

$$\text{Slope} = \frac{dy}{dx} = 0.5+1.6x$$

उच्च आर्थिक सिद्धान्त

मांग

वस्तुओं की मांग इसलिए की जाती है, क्योंकि उनमें आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता होती है। हम कई बार वस्तु की मांग को इच्छा के अर्थ में समझते हैं। कई बार हम आवश्यकता को मांग समझ लेते हैं। परन्तु एक उपभोक्ता की प्रत्येक आवश्यकता या इच्छा मांग नही कहलाती है यदि एक व्यक्ति की इच्छा मंहगी गाडी खरीदने की है तो इसका अर्थ यह नही है की उसकी मंहगी गाडी की मांग है। जब तक एक व्यक्ति की किसी वस्तु को खरीदने का सामर्थ्य नही है और वह उस पर धन खर्च करने को तैयार नही है, तो यह नही माना जा सकता है कि वह वस्तु की मांग करता है। अर्थशास्त्री पैन्सन ने इसे प्रभावी मांग बताया है। मांग को तब विद्यमान माना जा सकता है जब एक व्यक्ति की खरीदने की इच्छा, खरीदने का सामर्थ्य और उसकी दी गई वस्तु और सेवा पर मुद्रा खर्च करने की इच्छा पाई जाती है। जे0 एस0 मिल के अनुसार ष्मांग एक वस्तु की एक विशेष समय और एक विशेष कीमत पर खरीदी गई मात्रा है ''बैन्हम के अनुसार, ''एक दी गई कीमत पर किसी वस्तु के लिए मांग इसकी वह मात्रा हे जो समय की प्रति इकाई में उस कीमत पर खरीदी जायेगी''

मांग फलन

मांग फलन एक विशेष वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा और उसे प्रभावित करने वाले कारको के बीच के संबंध को दर्शाता है। मांग फलन के दो प्रकार है व्यक्तिगत मांगफलन और बाजार मांग फलन। व्यक्तिगत मांग फलन एक उपभोक्ता के सन्दर्भ में प्रयुक्त है और बाजार मांग फलन सभी उपभोक्ताओ के सदंर्भ में प्रयुक्त होता है।

व्यक्तिगत मांग फलन

व्यक्तिगत मांग फलन व्यक्तिगत मांग और व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारकों के बीच सम्बन्ध दर्शाता है।

DA = f(PA, Pr, Y, T, F)

DA = वस्तु A की मांग

PA = वस्तु A की कीमत

Pr = सम्बन्धित वस्तुओ की कीमत

Y = उपभोक्ता की आय

T = अभिरूचिया और प्राथमिकताएं

F = भविष्य में कीमत परिवर्तन की समभावना

उपरोक्त मांग फलन में दायीं तरफ मांग को प्रभावित करने वाले सभी कारक है और बायीं तरफ वस्तु की मांग है।

बाजार मांग फलन

बाजार मांग फलन बाजार मांग और बाजार मांग को प्रभावित करने वाले कारकों के बीच फलनात्मक संबंध को दर्शाता है। बाजार मांग सभी उपभोक्ताओं की मांग का जोड है। इसलिए बाजार मांग में व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारकों के साथ जनसंख्या के आकार और संरचना, मौसम और जलवायु और आय के वितरण को भी शामिल किया जाता है। बाजार मांग फलन को निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है।

DA = f(PA, Pr, Y, T, F, Po, S, D)

DA = वस्तु । की मांग

PA = वस्तु । की कीमत

Pr = सम्बन्धित वस्तुओ की कीमत

Y = उपभोक्ता की आय

T = अभिरूचिया और प्राथमिकताएं

F = भविष्य में कीमत परिवर्तन की समभावना

Po = जनसंख्या का आकार और संरचना

S = मौसम और जलवायु

D = आय का वितरण

मांग का नियम

मांग का नियम अर्थशास्त्र के प्रमुख नियमों में से एक है। हमारे दैनिक जीवन में यह देखा जा सकता है कि कीमत में कमी मांग को बढा देती है और कीमत में वृद्धि मांग को कम कर देती है। यह प्रकृति मांग के नियम का निर्माण करती है। मांग का नियम वस्तु की मांग और कीमत में फलनीय सम्बन्ध को प्रकट करता है।

मांग का नियम बताता है कि यदि अन्य बातें समान रहे तो कीमत घटने पर मांग बढती है और कीमत बढने पर मांग घटती है। अन्य बातों का अर्थ यहां पर कीमत को छोडकर व्यक्तिगत और बाजार मांग को प्रभावित करने वाले कारक आते है। सैम्युलसन के अनुसार, यदि अन्य बाते समान रहें तो कम कीमतों पर लोग अधिक मात्रा और उंची कीमतों पर कम मात्रा खरीदेंगे। मांग का नियम कीमत और माँग में ऋणात्मक संबंध को दर्शाता है। माँग के नियम को माँग तालिका और माँग वक्र की सहायता से समझा जा सकता है।

मांग तालिका

तालिका

कीमत (रूपये में)	मांगी गई मात्रा (इकाईयाँ)
50	10
40	20
30	30
20	40
10	50